दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

टेस्ट–11
(प्रथम प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2311**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Praduman kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): test - 11, 23/08/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	1	4	9	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______________ टिप्पणी (Remarks): ______________

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) यूनीकोड और हिन्दी

हिन्दी के वैज्ञानिक विकास एवं तकनीकी विकास हेतु हिन्दी को लिपि को सरल रूप से टंकण करने की दिशा में यूनीकोड एक परिवर्तनकारी घटना है।

* यूनीकोड माध्यम से हिन्दी का टंकण करना आसान हो गया है।
* पहले टंकण करने में समस्याएं आती है जिसका निदान इसके माध्यम से हो गया है।
* देवनागरी के शब्दों को सभी को टंकण करने की सुविधा है।
* इसने हिन्दी के वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* तकनीक से बढ़ने से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को बढ़ावा मिला है।

भूमंडलीकरण हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता रहा है। जिसने हिन्दी वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा के रूप में आगे बढ़ी है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बुंदेली' बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बुंदेली पूर्वी उपभाषा वर्ग की बोली है। जिसका क्षेत्र बुंदेलखण्ड के आसपास का है। भाषिक, व्याकरणिक प्रवृत्ति में यह प्रायः अवधी के करीब है।

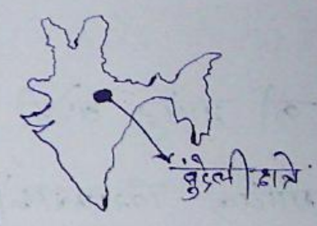

विशेषताएं

* बुंदेली उकारबहुला भाषा है।
* एकवचन से बहुवचन के लिये ए, यॉं प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है
* स्त्रीलिंग प्रायः ईकारान्त होते हैं
* अल्पप्राणीकरण शब्दों की प्रवृत्ति पाई जाती है
* सर्वनाम का एक ही रूप मिलता है

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

* "ण" शब्द का कम प्रयोग होता है उसके स्थान पर न का प्रयोग होता है।

* क्रिया रुपों में त रुप, व रुप एवं ल रुप का प्रयोग होता है

अतः बुंदेली पूर्वी उपभाषा

को प्रसिद्ध बोली है जो अपनी कुछ मौलिक विशेषताओं के कारण अपना स्वतंत्र चरित्र बनाये हुये है। ग्रियर्सन ने इसे स्वतंत्र बोली माना है। जिसमें अपनी मौलिक विशेषताएं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु हिंदी साहित्य सम्मेलन के सुझाव

देवनागरी हिन्दी भाषा के लिये प्रयुक्त होने वाली लिपी है जो ब्राह्मी लिपि से बनी है। देवनागरी के मानकीकरण की दिशा में सदियों से प्रयास चल रहे है। जिसके हिंदी साहित्य सम्मेलन का विशेष योगदान है

सुझाव

* ख, ण, ञ जैसे अनावश्यक शब्दों को वर्णमाला से हटा देना चाहिए।
* डॉ एवं कॉपी शब्दों में चंद्र बिंदु का प्रयोग करना चाहिए।
* ख व रव में भ्रम होता है इन्हें मिला देना चाहिए जैसे - "ख"।
* र यदि पहला व्यंजन है तो रेफ का प्रयोग किया जाना चाहिए।
  कार्य > कर्म

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(*) शिरोरेखा को बनाये रखा जाये।

(*) साथ ही हिन्दी की अन्य बोलियों की लिपि से शब्द ग्रहण किये जा सकते हैं।

(*) ङ, ड़ यदि बीच में आते है तो हलंत का प्रयोग होना चाहिए।

गङगा > गङ्गा

देवनागरी लिपि को अखिल भारतीय लिपि बनाने हेतु हिन्दी साहित्य सम्मेलन को दी गई सिफारिशों को जल्द से जल्द स्वीकारना चाहिए। तथा देवनागरी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

थियोसोफिकल की अध्यक्षा एनी बेसेंट थी जो आयरलैंड से संबंधित थी। स्वतंत्रता आन्दोलन एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन के साथ इन्होंने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एनी बेसेंट ने अपने अभिभाषण में कहा था कि हिन्दी विश्व की किसी भी भाषा से कमतर नहीं है तथा यही देश की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए।

(*) दक्षिण राज्यों में राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए थियोसोफिकल ने विशेष समिति गठित की।

(*) गैर हिन्दी राज्यों में सम्पूर्ण हिन्दी के प्रचार को मुख्य लक्ष्य बनाया

(*) सरकार से अपनी मांगों को प्राप्ति में इन्होंने स्थानीय भाषा अर्थात्

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाये जाने की सिफारिश की।

* हिन्दी के संदर्भ में अनेकों पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कराया तथा हिन्दी पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद कराया।

अतः राजभाषा हिन्दी के प्रचार में थियोसोफिकल सोसाइटी का विशेष योगदान रहा है जिसके लिये यह प्रशंसा की पात्र रही है। एनी बेसेंट द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में योगदान मुख्य काम रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' का योगदान।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द हिन्दी के फारसीनिष्ठ प्रयोग के प्रतिनिधि लेखक थे। इनकी इसी लेखन शैली का प्रयोग आगे प्रेमचंद जैसे लेखकों ने किया।

शिवप्रसाद सितारे हिन्द जी ने राजा भोज का सपना जैसे नाटक लिखे। इनकी भाषा पर फारसी प्रभाव परिलक्षित होता है जो राजा लक्ष्मणसिंह की संस्कृतनिष्ठ भाषा से भिन्न था।

"सितारे हिन्द" जी ने हिन्दी का व्याकरण भी लिखा जो फारसी व्याकरण पर आधारित था, आगे किशोरीदास बाजपेयी ने भी इनके व्याकरण से प्रेरित होकर व्याकरण रचा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भारतेन्दु युग के दौर में हिन्दी के विकास में सतत लेखन करते हुए इन्होंने हिन्दी खड़ीबोली साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि तैयार की।

अतः शिवप्रसाद सिंह ने हिन्दी के साहित्य में निरंतरता बनाये रखी तथा आने वाले साहित्य एवं लेखकों के लिए पृष्ठभूमि तैयार की। इनकी भाषा शैली की झलक प्रेमचंद एवं यशपाल जैसे लेखकों में दिखती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

अपभ्रंश संस्कृत साहित्यिक प्राचीन को पालि, प्राकृत के बाद तीसरा चरण था जिसमें अनेक प्रकार का मूल्यवान साहित्य रचा गया जो आगे हिन्दी साहित्य का आधार बना एवं हिन्दी के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई।

योगदान

वीरगाथाकाल - अपभ्रंश में ही सर्वप्रथम वीरता पर आधारित साहित्य रचा गया जिसके परिणाम स्वरूप आगे रासो काव्यधारा का प्रचलन हुआ जो हिन्दी साहित्य की प्रमुख धारा है इस प्रकार कह सकते हैं रासो काव्यधारा अपभ्रंश के साहित्य की हिन्दी साहित्य को देन है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धार्मिक काव्य - अपभ्रंश में ही धार्मिक साहित्य रचा गया जैसे- स्वयंभू का परिम चरऊ आदि। इसी से प्रभावित होकर आगे हिन्दी का पहला महाकाव्य (पृथ्वीराज रासो) एवं धार्मिक ग्रंथ रामचरितमानस की रचना हुई साथ ही कृष्ण काव्यधारा एवं रामकाव्यधारा का विकास हुआ।

चरित काव्य - चरित्र प्रधान काव्यों की शुरुआत अपभ्रंश से प्रेरित मानी जाती है जिसमें हेमचन्द्र के काव्य से प्रेरणा लेकर हिन्दी के महत्वपूर्ण चरित काव्य रचे गये। पहला महाकाव्य चरित्रप्रधान- पृथ्वीराजरासो - रामचरितमानस आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साहित्यिक रूढ़ियां - हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त होने वाली साहित्यिक रूढ़ियां जैसे बारहमासा, विरह, सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निंदा, एवं कड़वक शैली, सात चौपाई के बाद दोहे का घत्ता का प्रयोग इसका प्रयोग आगे सूफीकाव्यधारा में जायसी ने एवं तुलसीदास ने रामचरितमानस में किया है।

सिद्ध-नाथ साहित्य - सिद्ध-नाथ साहित्य अपभ्रंश में रचा गया साहित्य था जो आडंबर विरोधी, जातिवाद गुरु को अधिक महत्व पर आधारित था जिससे प्रभावित होकर आगे निर्गुण काव्यधारा का प्रसार हुआ तथा कबीर जैसा सशक्त कवि का उदय हुआ। साथ सिद्ध नाथ प्रयुक्त संधा भाषा का प्रयोग आगे कबीरदास ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

को दिया

"साथ बोले अमृत बानी
बरसेगी कम्बली भीजेगा पानी"

इस प्रकार हिन्दी साहित्य की परम्परा एवं विकास में अपभ्रंश साहित्य की गहरी प्रेरणा विद्यमान रही है साथ ही न केवल साहित्यिक स्तर पर वरन आर्थिक स्तर पर अपभ्रंश का अमूल्य योगदान रहा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारत में अनूदित लेखन की परंपरा विद्यमान रही है जो वर्तमान में ही नहीं प्राचीन एवं मध्यकाल में रही तथा ब्रिटिश काल में प्रायः इसे बढ़ावा मिला।

प्राचीन काल में में हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों, एवं संत ग्रंथों का अनुवाद किया जाता था।

साथ ही मुगल में इसको प्रश्रय दी अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की जिसका कार्य हिन्दी ग्रथों को फारसी में अनुवाद कराना था।

ब्रिटिश काल में इसकी मात्रा बढ़ी है जैसे एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के द्वारा विभिन्न ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद कराया गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जिसमें - अभिज्ञान शकुन्तलम, गीता, एवं मनुस्मृति प्रमुख थी।

स्वतंत्रोत्तर काल में तथा वैश्वीकरण काल में इसकी प्रवृत्ति बढ़ी है जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न किताबों का हिन्दी में अनुवाद कराया है

जैसे- विपिन चन्द्रा - आधुनिक भारत इतिहास
भूगोल पुस्तक

निजी क्षेत्र में इस दिशा में रुचि लेता है जिससे व्यापार के साथ-2 देश विदेश के ज्ञान विज्ञान साहित्य को जानने का अवसर मिलता है जैसे- फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का अनुवाद, मार्क्स के दास कैपिटल का अनुवाद आदि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सरकार भी इस दिशा में विशेष सराहना एवं प्रोत्साहन देते हुए हिन्दी के अनुवाद को बढ़ावा दे रही है।

प्राचीन काल से शुरू हुई अनुवाद लेखन की परम्परा ने वैश्वीकरण के वर्तमान युग में विशेष महत्व धारण कर लिया है जिससे अर्थव्यवस्था के साथ दो देशों के साहित्य एवं सांस्कृतिक आदान प्रदान बढ़ा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उत्तर भारत के राज्यों के दक्षिणी आक्रमण के साथ (अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद बिन तुगलक, मुगल) अनेक सूफी संत व्यापारी दक्षिण गये, जिन्होंने वहाँ की भाषा को अपनाने के बजाये, अपनी ही फारसीयुक्त खड़ीबोली का प्रयोग जारी रखा।

ब्रज बोली पर

दक्षिणी भाषा तमिल, तेलुगु, कन्नड़ एवं मलयालम के प्रभाव से जो बोली बनी वह दक्खिनी हिन्दी कहलायी। जिसका क्षेत्र तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश एवं केरल है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाषागत विशेषताएँ - दक्खिनी हिन्दी में खड़ीबोली की ही विशेषताएँ विद्यमान हैं। इनके कुछ विशेषताएं निम्न भी हैं

* संघोष का अघोषीकरण की प्रवृत्ति
  खूबसूरत > खुपसूरत
* महाप्राण ध्वनियों का अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति
  धोखा > धोका
* "ण" का अधिक प्रयोग न का का कम प्रयोग
* शुरुआती स्वर का ~~स्वर का~~ लोप हो जाता है कहीं-कहीं।
  उकड़ना > कड़ना
* क्रिया रूप खड़ीबोली के समान है
  वर्तमान → त रूप
  भूतकाल - य रूप
  भविष्यकाल - ग रूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

भाषा के स्तर पर खड़ीबोली के समान है जैसे "जिसे इश्क का तीर कारी लगे उसे जिंदगी क्यों न भारी लगे"

दक्खिनी हिन्दी : दक्षिण भाषा से प्रभावित हिन्दी बोलियों या भाषा का ही रूप है जो हिन्दी के प्रसार को व्यापक स्तर पर पहुँचाता है। दक्खिनी हिन्दी पर फारसी प्रभाव अधिक प्रतीत होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. (क) स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए सरकारी प्रयासों पर प्रकाश डालिए। 20

स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ-साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य शुरू हुआ। जिसमें प्रमुख नेता एवं समाजसेवी का प्रमुख योगदान रहा। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी को सम्पर्क भाषा माना गया था।

* गांधी जी ने सर्वप्रथम स्वतंत्रता हिन्दी के विकास का मुद्दा उठाया तथा 1918 के इंदौर अधिवेशन में अपना वक्तव्य दिया कि हिन्दी ही हिन्दुस्तान की भाषा हो सकती है तथा होनी भी चाहिए।

* 1925 के कानपुर अधिवेशन के बाद कांग्रेस अधिवेशन के साथ-साथ ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भी आयोजन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

किया जाने लगा।

* स्वतंत्रता आन्दोलन के आन्दोलन अनेकों पार्टियों, समूहों, एवं नेताओं ने इसको बढ़ावा दिया।

* थियोसोफिकल सोसायटी ने स्वाधीनता आन्दोलन के साथ हिन्दी के प्रचार प्रसार को भी मुख्य लक्ष्य बनाया इस रूप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में एनीबेसेंट का विशेष योगदान रहा।

* होमरूल लीग आन्दोलन ने भी अपनी तीन शर्तों में से 1 शर्त में स्थानीय भाषा में शिक्षा दिये जाने को लक्ष्य बनाया।

* गाँधी जी ने अपने पुत्र देवदास को हिन्दी के प्रसार के लिए दक्षिण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भेजा तथा 1927 में दक्षिणी भारतीय हिन्दी प्रचार समिति का गठन किया गया।

* स्वतंत्रता से पहले सभी नेताओं की आम राय थी कि हिन्दी ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए जिस कारण स्वतंत्रता आन्दोलन में एकमत से हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा दिया गया।

* हिन्दी प्रचार समिति, साहित्य सम्मेलन एवं संगोष्ठि के माध्यम से प्रचार को बढ़ाया है।

* नवजागरण चेतना एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन ने भी इसमें मुख्य भूमिका निभाई।

* लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कार्य। कालेलकर, टंडन जी आदि नेताओं ने हिन्दी के प्रचार में विशेष दिया है

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जैसे आन्दोलन बढ़ा वैसे ही हिन्दी का मुद्दा भी बढ़ा तथा इसने हिन्दी के प्रचार में विशेष भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के बाद 1967 में गठबंधन की राजनीति के बाद हिन्दी को ठण्डे बस्ते में डाल दिया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

बिहारी हिन्दी, हिन्दी की एक उपभाषा वर्ग है। जनसंख्या की दृष्टि से इसके बोलने वालों की संख्या अधिक है। इसमें मगही, ~~अवधी~~ मैथिली एवं भोजपुरी आती है। भोजपुरी का अधिक वर्ग देश से बाहर भी फिजी, टोबेगो, त्रिनाद आदि में है।

मगही - बिहारी हिन्दी की बोली है जो अपनी व्याकरणिक, आर्थिक प्रवृत्तियों के में भोजपुरी के करीब है तथा आलोचक इसे भोजपुरी ही मानते हैं किन्तु ग्रियर्सन ने स्वतंत्र बोली माना है इसका क्षेत्र मुख्यतः छपरा, चंपारन, सहरसा आदि का है

~~अवधी~~ मैथिली - बिहारी वर्ग की प्रसिद्ध बोली है जिसे संविधान संशोधन से 22 भाषाओं में शामिल किया गया है इसकी अपनी स्वतंत्र लिपि भी है जिसे "कैथी लिपि" कहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जाता है इसका क्षेत्र मुख्यत: मिथिलांचल है जिसके जिलेमें दरभंगा, गया आदि क्षेत्र आते है

यह भोजपुरी से व्याकरणिक रूप से प्रभावित है किन्तु इसमें "ड़" व "ल" ध्वनि का अधिक प्रयोग किया जाता है। बिहारी हिन्दी वर्ग की सबसे मीठी बोली है।

भोजपुरी - इसके बोलने वालों की संख्या लगभग 6 करोड़ है यह बिहारी हिन्दी वर्ग की प्रचलित बोली है इसकी निम्न विशेषताएं है जो प्रायः मगही, ~~अवधी~~ मैथिली में भी मिलती है

* स्त्रीलिंग स्वरांत होते है
* बहुवचन बनाते समय इन, याँ, लोगन शब्दों का प्रयोग किया जाता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

* क्रिया में वर्तमान के लिए - ब रूप
  भूतकाल के लिए - ल रूप
  भाविष्य " - बल रूप
* संज्ञा के तीनों रूप मिलते है
* ण नहीं मिलता "न" मिलता है
* ड, र, य आपस में मिल जाते है

बिहारी हिन्दी, हिन्दी का बड़ा एवं विस्तृत उपभाषा वर्ग है बिहारी हिन्दी की बोलियों में समानता है वैसी अन्य बोलियों में नहीं है साथ ही इनका वक्ता वर्ग सबसे बड़ा है जो विदेशों में भी है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

(ग) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

श्री कामताप्रसाद गुरु हिंदी के व्याकरण लेखन के तीसरे दौर के हैं जिन्हें सन् 1916 में सर्वसम्मति से हिन्दी के व्याकरण लेखन का कार्य सौंपा गया था। 2 साल के ~~अनुच्छेद~~ अनुसंधान के बाद 1918 में इन्होंने व्याकरण प्रस्तुत किया जिसे संशोधन के बाद 1919 में स्वीकार कर लिया गया।

(*) कामताप्रसाद के व्याकरण की विशेषता
- की समन्वयता इन्होंने पारसी शब्दों के व्याकरण के लिए [illegible] के व्याकरण को आधार बनाया एवं संस्कृत के लिए लक्ष्मीसिंह के व्याकरण को।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(*) इन्होंने परिभाषा की भी सरलता पूर्वक [illegible] है जैसे समास - में ये कहते हैं दो शब्दों को जोड़ने वाले शब्दों को हटाने के बाद बना शब्द समास है
- माता और पिता → माता-पिता

(*) इसी प्रकार संधि-विच्छेद को इन्होंने लिखा है कि दोनों शब्दों को दो भागों में बाँटना ही संधि विच्छेद है जैसे
लोकेश्वर → लोक + ईश्वर

(*) लिंग परिभाषा इनकी आज तक मान्य है जो सरल रूप धारण करती है जिन शब्दों से वस्तु के स्त्री या पुरुष होने का बोध होता हो उसे लिंग कहते हैं
जैसे- नदी - स्त्रीलिंग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पहाड़ – पुल्लिंग।

अतः इस प्रकार
कामताप्रसाद के व्याकरण की प्रमुख विशेषता
इसकी सरलता था लोग ही सके व्याकरण
के बाद हिन्दी को विषय रूप में
स्वीकृति मिले एवं BA MA का
पाठ्यक्रम तैयार हुआ। स्वतंत्रता
आंदोलन के दौरान गैर हिन्दी भाषी लोगों
को हिन्दी सीखने में बाधा थी व्याकरण
का न होना उन्होंने इस समस्या का
निराकरण कर हिन्दी का प्रसार किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राजभाषा हिंदी' की वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु सुझाव दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिंदी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों के योगदान का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संतकाव्यधारा एवं सूफी काव्यधारा दोनों ही भक्तिकाल की निर्गुन काव्यधारा है जिनके प्रतिनिधि कवि क्रमशः कबीर एवं जायसी है।

संत काव्यधारा	सूफीकाव्यधारा
* साधनात्मक रहस्यवाद पर आधारित साधना पद्धति पर जोर	* भावनात्मक रहस्यवाद पर आधारित साधना पद्धति, जोर
* ईश्वरीय प्रेम पर अधिक बल -"निर्गुन राम जपहु रे भाई"	* मानवीय प्रेम पर बल -"मानुष प्रेम भयउ बैकुंठी"
* धार्मिक, आडंबरों जातिवाद का विरोध -"कांकर पत्थर जोरि के मसजिद लई बनाय"	* सांस्कृतिक समन्वय की चेतना हिंदू-मुस्लिम समन्वय को आधार बनाया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

शास्त्रों का विरोध "पोथि-पोथि जग मुआ पंडित भया न कोय" * ईश्वर भक्ति में विरह दिखाया है।	* शास्त्रों के प्रति कोई नजरिया नहीं न सकारात्मक न नकारात्मक * मानवीय प्रेम पर विरह - नागमती विरह

दोनों काव्यधारा पर्याप्त अलग हैं किंतु समानता भी मौजूद है जैसे समानता का विचार, प्रकृति चित्रण, प्रेम पर बल आदि। दोनों काव्यधारा भक्तिकाल की प्रमुख काव्यधाराएं हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

रामकुमार वर्मा प्रसिद्ध एकांकीकार के साथ-साथ नाटककार भी हैं इन्होंने सामाजिक पर्यावरण एवं पौराणिक आख्यानों पर नाटक रचे हैं जो अर्थ में जयशंकर प्रसाद के नाटकों का अगला चरण है।

रामकुमार वर्मा के नाटक प्राय: दुखांत होते हैं जिसमें ये पाश्चात्य अरस्तवी परम्परा के विरेचन से प्रभावित लगते हैं।

* पौराणिक आख्यान को आधार बनाकर समसामयिक समस्याओं को उठाया है।
* इतिहास के प्रति इनकी दृष्टि यशपाल की दृष्टि के विपरीत एवं जयशंकर प्रसाद के करीब है।
* इन्होंने स्त्री चेतना, दलित, मजदूर एवं वंचितों के शोषण जैसे मुद्दों को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने नाटकों का आधार बनाते हैं

* स्त्री को पराधीन नहीं स्वाधीन करने वाले नजरिये का प्रयोग इन्होंने किया है।

* अब प्रकार के नाटकों में कुछ नाटक मनोवैज्ञानिक आधार पर रचित है जिसमें व्यक्ति के अन्तर्द्वंद्व को दिखाया गया है।

अतः रामकुमार वर्मा हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार हैं जिन्होंने जयशंकर प्रसाद की परम्परा को आगे बढ़ाया है किन्तु इनके नाटक मंचन के अनुकूल होते हैं जिसमें पर्याप्त मंचीय संकेत दिये जाते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय हिन्दी साहित्य के

अज्ञेय प्रयोगशील एवं नई कविता परम्परा के प्रणेता हैं इनकी काव्यरचनाएं मनोवैज्ञानिक एवं बौद्धिक परिपक्व होती हैं जिनपर फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद एवं सार्त्र के अस्तित्व का प्रभाव झलकता है।

* अज्ञेय की रचनाएं सूक्ष्म विश्लेषणात्मक एवं बौद्धिक परिपक्व होती हैं

* अज्ञेय का ध्यान रोमानी विषयों पर अधिक रहता है इसलिये इन्होंने रोमांटिसिज्म भरी रचना की जैसे- कितनी नावों में कितनी बार।

* मनोविश्लेषण प्रभाव के कारण इनके काव्य में बाह्य जगत से अधिक अन्तर्जगत को दिखाया जाता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* अज्ञेय की रचना का एक वर्ग वेदना का को है जिसमें बेहतर अंतर्द्वंद्व को दिखाया गया है।

* अज्ञेय का शिल्प, सरल, सहज है जिसमें प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है

* शेखर एक जीवनी जैसे उपन्यास अन्तर्जगत पर केंद्रित है

अतः अज्ञेय की काव्यकृति अस्तित्ववादी एवं मनोविश्लेषण विचारधारा द्वारा निर्मित हुई है जिसमें मानव के अंतर्मन का स्वरूप अंकन मिलता है। ये व्यक्ति से अधिक समाज को महत्व देते हैं- "हम नदी को द्वीप हैं वह हमें आकार देती है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

प्रगतिवादी उपन्यासधारा, मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित धारा है जिसमें सामाजिक समस्याओं एवं वंचितों को केंद्रीय कथ्य बनाया जाता है जिसमें नायक निम्नवर्गीय होता है। यशपाल - दिव्या, झूठा सच, भीष्म साहनी - सरोखे, राहुल सांकृत्यायन आदि प्रमुख उपन्यासकार हैं।

* इसमें शोषक तथा शोषित वर्ग को दिखाया जाता है एवं शोषक के विरुद्ध क्रांति का आह्वान होता है।

* नायक मध्य या उच्च वर्ग का न होकर निम्नवर्गीय एवं सर्वहारा वर्ग का होता है

* प्रगतिवादी उपन्यास में शिल्प को गौण महत्व दिया जाता है जबकि संवेदना को केंद्रीय कथ्य माना जाता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* इसमें सामाजिक समस्याओं, वंचितों की समस्या एवं दुःख गरीबी, भ्रष्टाचार को केन्द्रीय विषय बनाया जाता है।

* प्रेमचंद के उपन्यास भी एक अर्थ में प्रगतिवादी उपन्यास है।

अतः प्रगतिवादी उपन्यास धारा प्रचलित धारा है जिसमें निम्नवर्गीय व्यक्तियों को बढ़ावा दिया जाता है तथा इसके लेखक उपन्यास को सामाजिक दायित्व मानते हैं इनके उपन्यासों में संवेदना को केंद्रीय महत्व दिया जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अष्टछाप

वल्लभाचार्य ने सगुण ईश्वर की स्थापना करने एवं ~~[illegible]~~ शैवाद्वैतवाद को बढ़ावा देने के लिए पुष्टिमार्ग की स्थापना की इसी पुष्टिमार्ग के विकास के लिए वल्लभाचार्य के कनिष्ठ पुत्र विट्ठलनाथ ने अष्टछाप की रचना (गठन) किया।

अष्टछाप 8 कवियों का समूह था जिसका कार्य कृष्ण भक्ति में गीतों, पदों की रचना करनी थी। कभी-कभी इन 8 को अष्टसखा भी कहा गया है

इनमें से 4 शिष्य वल्लभाचार्य के थे तथा 4 विट्ठलनाथ के थे। सूरदास इनमें प्रमुख कवि थे जिन्होंने अकेले कृष्ण भक्ति में सवा लाख पदों की रचना की। विट्ठलनाथ ने भी सूरदास को अष्टछाप का जहाज कहा है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अवधी में नंददास, कृष्णदास थे जिन्होंने अवधी, तत्सम शब्दों को ब्रजभाषीकरण कर दिया। कृष्णदास तो इतने कृष्णभक्ति में रम गये कि उन्हें सुल्तान का बुलावा भी नागवार लगा -

"संतन को कहा सिकरी सों काम
आवत जात पनहिया टूटी, बिसरी गयो हरिनाम"

कृष्णभक्ति के विकास एवं ब्रजभाषा को अखिल भाषा बनाने में अष्टछाप का विशेष योग रहा है अष्टछाप के कारण ही कृष्णभक्ति काव्यधारा का अखिल स्तर पर विस्तार सम्भव हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'नई कहानी' की शिल्पगत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। 20

"नई कहानी" आन्दोलन को 1956 से शुरू माना जाता है जब भैरवप्रसाद गुप्त ने नई कहानी नाम से विशेषांक निकाला था। यह अपनी पूर्ववर्ती कहानियों से कई अर्थों में भिन्न है इसलिए इसे "नई कहानी" कहा जाता है।

नई कहानी शिल्प, संवेदना, विषयवस्तु सभी आधार पर अपनी पूर्ववर्ती कहानियों से भिन्न है नई कहानी की निम्न शिल्पगत विशेषताएं हैं।

कथानक - कथानक स्तर पर नई कहानी में कथानक टूट गया है गया है लेखकों ने इसका कारण बताया है कि यदि जिंदगी में ही बिखराव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हो तो फिर कहानी में क्यों न हो कथानक का इतना ह्रास तो प्रेमचंद की गिला कहानी में पोत्साहित हुआ किंतु यहाँ, खोई हुई दिशाएं जैसी कहानियों में कथानक पूर्णतः ह्रास गया है

उद्देश्य अभाव - नई कहानी किसी उद्देश्य को लेकर नहीं चली है न कोई समाधान दिखती है

चरित्र योजना - नई कहानी के चरित्र एकदम स्वाभाविक जो अच्छे या बुरे का प्रतिनिधित्व न करके दोनों का संश्लेषण है साथ ही चरित्रों में विचलन, अंतर्द्वंद्व, स्वार्थ, विसंगतिबोध जैसे स्वाभाविक गुणों को दिखाया है जिसका सुन्दर उदाहरण मन्नू भण्डारी की कहानी यही सच है में दिखता है जिसमें लेखिका ने दिखाया है "कि प्रेम किसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

की एकनिष्ठ क्यों न हो पूर्णतः [illegible] नहीं हो सकता"

भाषा - भाषा के स्तर पर नई कहानी में नये प्रयोग देखने को मिलते हैं साथ ही अंतर्द्वंद्व के कारण, मनन, विश्लेषण के कारण भाषा प्रायः प्रतीकात्मक है। जैसे- सड़कों पर लाशें आंखें लाल, पीली हो रही है

व्यंग्यात्मक - व्यंग्यात्मक शैली भी नजर आती है -"किसी को देखने का कोई मतलब नहीं है आँखें है इसलिये देखना पड़ता है"

कहीं-कहीं भाषा बिंबात्मकता को धारण करती है जैसे - चांद सड़क पर खड़ा बस का इंतजार कर रहा है

साथ ही बात आती है कि नयी कहानियों में ये परिवर्तन क्यों आया है इसमें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

आजादी से मोह भंग, मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का केन्द्र में होना, स्त्री-पुरुष बदलते संबंध, नगरता शहरीकरण आदि।

अत: नयी कहानी अपनी संवेदनात्मक एवं शिल्पगत विशेषताओं के कारण एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है तथा यह कहानी के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ती है। मुख्य लेखक मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, मोहन राकेश, मार्कण्डेय, राजेन्द्र यादव आदि हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए। 15

घनानंद रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। इनको प्रेम का पीर कहा जाता है। इन्होंने 69 रचनाएं की जिनमें से सबसे प्रसिद्ध रचना सुजानहित है।

घनानन्द का काव्य संवेदना के स्तर पर चरम अनुभूति को स्पर्श करता है। इनके काव्य में रीतिकालीन श्रृंगारिक चमक-दमक कम संवेदना एवं प्रेमानुभूति अधिक है।

घनानन्द की भाषा परिनिष्ठित ब्रजभाषा है जिसमें बिहारी की श्रृंगारिक भोगमूलक मानसिकता के विपरीत ब्रजभाषा संवेदनात्मक स्तर पर ब्रजभाषा अपने चरम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्वरूप का दिग्दर्शन करती हैं
"अति सूधो सनेह को मारग है"

घनानंद दरबारी कवि थे अतः उन्होंने कुछ प्रबंध काव्यों एवं मुक्तकों की रचना की है। जिसमें राजा की प्रशंसा की है किन्तु रीतिकाल के साथ छेड़छाड़ नहीं की है

घनानंद की प्रसिद्ध काव्यरचना सुजानहित संवेदना के स्तर पर महान है जिसमें घनानंद का सुजान के प्रति प्रेम प्रकट हुआ है साथ ही राधा-कृष्ण आधार पर मानते कर उन्होंने उसे आध्यात्मिक रूप दे दिया है जिस कारण कविता संगीतात्मक गुण धारण किये है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"ऐसो रूप अगाधे राधे, राधे राधे राधे
तेरी मिलिवे को ब्रजमोहन बहुत जतन है साधे"

अतः घनानंद अपनी गहन संवेदनात्मक अनुभूति के कारण ही प्रेम के पीर कहे जाते हैं इन्होंने ब्रजभाषा को संवेदना के चरम तक पहुँचाया है। इनका "काव्य रूप" प्रेम संवेदना पर आधारित है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) छायावादी कविता के बिंब-सौंदर्य पर प्रकाश डालिये। 15

छायावादी कविता बिंब की दृष्टि से विश्व के किसी भी साहित्य को टक्कर देने में समर्थ है। छायावादी कवि भावनाओं को अनुभूति का विषय बना देते थे। कविताओं में अर्थग्रहण ही अपेक्षित नहीं होता बिंबग्रहण भी होता है।

छायावादी कविता में सरल, कठिन, जटिल, बिंबों का रूप पर रहा है।

सरल (ऐंद्रिक) बिंब - जहाँ सरल, संवेदनात्मक बिंब बने, तथा बिंब की अनुभूति प्रेमपूर्ण हो -

"नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण"

जटिल बिंब - यह ऐसे बिंब होते हैं जहाँ बिंब के अंदर बिंब होता है इसके लिए कवि में गहन बिंब निर्माण क्षमता अपेक्षित होती है।

"खिंच गये दृगों में सीता के राम मृगनयन"

बिंब में बिंब में भी बिंब का सुंदर उदाहरण है।

सरल बिंब - सरल, बिंब एकल्पीय होते हैं जिन्हे महसूस किया जाता है जैसे -

"कामायनी कुसुम वसुधा पर पड़ी न वह मकरंद रहा"

संश्लिष्ट बिंब - जहाँ दो बिंब आपस में मिलकर जुड़ गये हो एवं उनके मध्य भेद करना मुश्किल हो छायावाद में ऐसे बिंबों को बेहतर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग किया गया है।

"हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शीला की शीतल छांह"

छायावादी कविताएं
संवेदना के साथ शिल्प के धरातल पर
भी चरम अनुभूति का अनुभव कराती हैं
तथा निर्विवाद रूप से छायावादी बिंब
क्षमता विश्व के किसी भी काव्य को
टक्कर देने में समर्थ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पद्माकर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य के वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय की कहानी-कला की तुलना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र-लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation